आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:05-12-14

हम बच्चों को सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देकर स्वदर्शन चक्रधारी बनाने वाले ज्ञान-सागर बाप ने कहा, जब तक जीना है, मुझे याद करना है. मैं खुद तुमको यह वशीकरण मन्त्र देता हूँ. बाप की याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और यह स्वदर्शन चक्र घुमाने से तुम माया पर विजय पाते हो. अभी हम तुम्हारी आत्मा को पवित्र बनाकर घर ले जायेंगे फिर तुम सतयुग में सतोप्रधान शरीर लेंगे.

आज बाबा ने सारी मुरली में हमें यह दुखधाम (कलियुग) और सुखधाम (सतयुग) का फर्क समझाकर हमें अपने शांतिधाम और सुखधाम को याद करना सिखलाया हैं. उस पर ही कुछ पॉइन्टस निकालकर हम शांतिधाम और सुखधाम को याद करने की प्रैक्टिस करेंगे.

- बाबा कहते है चैन अथवा सुख सभी मनुष्य आत्माये चाहते हैं. परन्तु सुख और शांति के पहले चाहिए पवित्रता. पवित्र मनुष्य आत्मा को पावन और अपवित्र मनुष्य आत्मा को पतित कहा जाता है.

- बाबा कहते है पतित दुनिया वाले ही मुझे पुकारते हैं कि आकर हमको पावन दुनिया में ले चलो. मैं ही तुम्हें इस पतित दुनिया से लिबरेट कर पावन दुनिया में ले चलता हूँ. सतयुग में है पवित्रता, कलियुग में है अपवित्रता. वह है वाइसलेस वर्ल्ड, यह है विशश वर्ल्ड.

- बाबा कहते है सतयुग है वाइसलेस वर्ल्ड तो वहाँ जरूर मनुष्य बहुत थोड़े होंगे. बरोबर सतयुग में देवी-देवताओं का ही राज्य है, उनको ही चैन की दुनिया अथवा सुखधाम कहा जाता है. यह है दुखधाम. यह दुखधाम को बदल सुखधाम बनाने वाला एक ही परमपिता परमात्मा है. सुख का वर्सा तुम्हें जरूर बाप ही आकर देंगे.

- अब वह बाप कहते है यह दुखधाम को भूलो, शांतिधाम और सुखधाम को याद करो. इसको ही मनमनाभव कहा जाता है.

- बाबा कहते है तुम्हें इस चक्र को भी समझना है. तुम्हें ही ८४ जन्म लेने पड़ते हैं. जो पहले-पहले सुखधाम में आते हैं, उन्हों के है ८४ जन्म. इतना याद करने से भी बच्चे सुखधाम के मालिक बन जाते हैं.

- बाप कहते हैं बच्चे, शांतिधाम को याद करो और फिर वर्से को अर्थात सुखधाम को याद करो. पहले-पहले तुम शांतिधाम में जाते हो तो अपने को शांतिधाम, ब्रह्मांड का मालिक समझो. चलते-फिरते अपने को शांतिधाम निवासी समझेंगे तो यह पुरानी दुनिया भूलती जायेगी. फिर सतयुग है सुखधाम, शांतिधाम होकर तुम्हें सुखधाम जाना हैं. यह है सच्ची कमाई, जो तुम्हें अभी सच्चा बाप सिखलाते हैं.

- बाबा कहते है यह तुम्हारा भारत सचखण्ड था, अब भारत ही झूठखण्ड बना है. भारत को सचखण्ड बनाने वाला बादशाह टुथ (गॉड) वह है. सच्चा है एक गॉड फादर, बाकी हैं झूठे फादर.

- बाबा कहते हैं जब तक तुम्हारा शरीर छुटे तब तक तुम समझते ही रहेंगे. तुम बिल्कुल ही १०० प्रतिशत बेसमझ, कंगाल बन पड़े हो. तुम ही समझदार देवी-देवता थे, अब फिर से तुम देवी-देवता बन रहे हो. तुम सुखधाम में बहुत चेन में थे, अब बेचेन हो.

- बाप कहते हैं मन्मनाभव, तो तुम वैकुंठ के मालिक बनोगे. मुक्ति, जीवन-मुक्तिधाम को याद करो.

- बाबा कहते हैं परमपिता परमात्मा को ही नॉलेजफुल ज्ञान का सागर, आनन्द का सागर कहा जाता है. वह मनुष्य सृष्टि का बीजरुप है, सत है, चैतन्य है, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का उनको ज्ञान है. क्रियेशन को ही क्रियेटर से वर्सा मिलता है, इस बात को तुम्हारे सिवाय कोई भी नहीं समझते हैं.

ॐ शांति.